

6.11.88 • प्रातःक्लास ओमशान्ति "पिताश्री" शिवबाबा याद है१
 "मीठे बच्चे-याद रूपी दवाई से स्वयं को खर निरोगी बनाओ, याद और स्वदर्शन
 चक्र फिराने की आदत डालो तो विकर्माजीत बन जायेंगे"

प्रश्न:- जिन बच्चों को अपनी उन्नति का सदा खयाल रहता है, उनकी निशानी क्या होगी?
 उत्तर:- उनकी हर एक सदा श्रीमत के आधार पर होगी। बाप की श्रीमत है बच्चे देह अभिमान
 में न आओ, याद की यात्रा का चार्ट रखो। अपने हिसाब किताब का पोतामेल रखो। चेक करो-
 कितना समय हम बाबा की याद में रहे, कितना समय कितको समझाया।

गीत:- तू प्यार का सागर है... ओमशान्ति। यहाँ जब बैठते हो तो बाप की याद में बैठना
 है। माया बहुतों को याद करने नहीं देती क्योंकि देह अभिमानी है। कोई को मित्र सम्बन्धी
 कोई को खान पान आदि क्या-याद आता रहता है। यहाँ जब आते हो तो आह्वान करना
 चाहिए बाप का। जैसे लक्ष्मी की पूजा होती है तो लक्ष्मी का आह्वान करते हैं, लक्ष्मी कोई
 आती नहीं है। यह सिर्फ कहा जाता है तो तुम भी बाप को याद करो अथवा आह्वान करो।
 बात एक ही है। याद से ही विकर्म विनाश होगा। धारणा नहीं होती है-क्योंकि विकर्म बहुत
 किये हुए हैं। जिस कारण धारणा नहीं हो सकती है। बाप को याद नहीं कर सकते हैं। जितना
 बाप को याद करेंगे उतना विकर्माजीत निरोगी बनेंगे, हेल्थ मिलेगी। है बहुत सहज, परन्तु माया
 अथवा पास्ट के विकर्म रूकावट डालते हैं। बाप कहते हैं तुमने आधाकल्प याद किया है अथवा
 अभी तुम यहाँ बैठते हो तो प्रैक्टिकल में आह्वान करते हो क्योंकि जानते हो आने वाला है।
 मुरली सुनाने वाला है। परन्तु यह याद की आदत पड़ जानी चाहिए। खर निरोगी बनाने
 लिए सर्जन दवाई देते हैं कि मुझे याद करो। फिर तुम मेरे को आकर मिलेगी। मेरे द्वारा मेरे
 को याद करने से ही वसा पायेंगे। बाप और स्वीट होम को याद करना है। जहाँ जाना है-
 वह बुद्धि में रहना है। बाप वहाँ से आकर सच्चा पैगाम देते हैं और कोई भी ईश्वर का पैगाम
 नहीं देते हैं। वह तो यहाँ स्टेज पर पार्ट बजाने आते हैं और ईश्वर को भूल जाते हैं। ईश्वर
 का पता नहीं रहता है। उनको वास्तव में पैगम्बर मैसेन्जर कह नहीं सकते। यह तो मनुष्यों ने
 नाम लगाये हैं। वह तो यहाँ आते हैं उनको अपना पार्ट बजाना है। तो याद फिर कैसे करेंगे।
 पार्ट बजाते पतित बनना ही है। फिर अन्त में पतित से पावन बनना है। वह तो बाप ही
 आकर बनाते हैं। बाप को याद से ही पावन बनना है। बाप कहते हैं पावन बनने का एक ही
 उपाय है। देह सहित जो भी देह के सम्बन्ध है, उनको भूल जाना है। तुम जानते हो मुझ आत्मा
 को बाप को याद करने का फरमान मिला है। उस पर चलने से ही फरमानबरदार कहा जायेगा।
 जो जितना पुरुषार्थ करते हैं उतना फरमानबरदार है। याद कम करते तो कम फरमानबरदार है।
 फरमानबरदार याद भी अंत पाते हैं। बाप का फरमान एक तो है बाप को याद करो। दूसरा
 नालेज की धारणा चाहिए। याद नहीं करते तो सजायें बहुत खानी पड़ती। स्वदर्शन चक्र फिराते
 रहेंगे तो बहुत धन मिलेगा। भगवानुवाच मुझे याद करो और स्वदर्शन चक्र फिराओ अर्थात् इमाम
 के आदि मध्य अन्त को जानो। मेरे द्वारा मुझे भी जानो और सृष्टि के आदि मध्य अन्त का
 चक्र भी जानो। दो बात मुख्य हैं। इस पर अटेन्शन देना है। श्रीमत पर पूरा अटेन्शन देंगे तो
 ऊँच पद पायेंगे। रहमदिल बनना है। सबको रास्ता बताना है। कल्याण करना है। मित्र-सम्बन्धियाँ
 आदि को सच्ची यात्रा पर ले जाने की युक्ति रचनी है। वह हैं जिस्मानी यात्रायें। यह है रूहानी
 यात्रा। यह स्पीचुअल नालेज को ही पास नहीं। वह है सब शास्त्रों की फिलासाफी। यह है स्पीचुअल
 रूहानी नालेज। सुप्रीम रूह यह नालेज देते हैं। रूहों को। आये ही हैं रूहों को समझाकर वापस ले
 जाने। तो यहाँ जब आकर बैठते हैं तो कोई लाचारी आकर बैठते हैं। अपनी उन्नति का कुछ भी
 खयाल नहीं है। देह अभिमान बहुत है। देही अभिमानी हो तो रहम दिल बनें। श्रीमत पर वनों।
 फरमानबरदार नहीं हैं। बाप कहते हैं अपना चार्ट लिखो। कितना समय याद करते हैं। किस-समय
 याद करते हैं। आगे चार्ट रखते थे, अच्छा बाबा को न भेजो अपने पास तो चार्ट रखो। अपनी
 शकल देखनी है हम लक्ष्मी को वरने लायके बने हैं१ व्यापारी लोग अपने पास पोतामेल रखते हैं
 कोई-मनुष्य अपनी सारे दिन की दिनचर्या लिखते हैं। एक हॉबी रहती है लिखने की। यह तो बाप
 बहुत अच्छी बात समझाते हैं, कि हिसाब किताब रखो। कितना समय हम बाबा की याद में रहें।